



Access Online



Article DOI:

10.5281/zenodo.23016735

असिस्टेंट प्रोफेसर,
पत्रकारिता और
जनसंचार विभाग,
इंदिरागाँधी
विश्वविद्यालय, मीरपुर,
रेवाड़ी, हरियाणा

How to Cite:

डॉ. मुकुट कुमार अग्रवाल
(2026), कृत्रिम
बुद्धिमत्ता के दौर में
फैक्ट-चेकिंग, डीपफेक,
फैक्ट-चेकिंग और पत्रकारिता
की विश्वसनीयता का
अध्ययन, International
Educational Applied
Scientific & Research
Journal (IEASRJ),
Vol: 11, Issue: 9,
81-86

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में फैक्ट न्यूज, डीपफेक, फैक्ट-चेकिंग और पत्रकारिता की विश्वसनीयता का अध्ययन

डॉ. मुकुट कुमार अग्रवाल

ABSTRACT

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में पत्रकारिता और जनसंचार की प्रकृति में तीव्र परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सामाजिक माध्यम, वीडियो मंच, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने समाचारों के संकलन, लेखन, संपादन, प्रसारण, वितरण और उपभोग की पारंपरिक प्रक्रियाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी पत्रकारिता को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त करते हुए विशाल पाठक वर्ग उपलब्ध कराया है, वहीं फर्जी समाचार, भ्रामक सूचना, दुष्प्रचार, कृत्रिम रूप से निर्मित सामग्री, गहरे नकली वीडियो, सामाजिक माध्यमों के अल्गोरिदम, सनसनीखेज प्रस्तुति और पत्रकारिता की नैतिकता से जुड़े प्रश्नों ने उसकी विश्वसनीयता के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पत्रकारिता में समाचार संकलन, ध्वनि से पाठ निर्माण, अनुवाद, समाचार-सार निर्माण, शीर्षक निर्माण, सामग्री का वर्गीकरण और तथ्य-जाँच जैसे कार्यों में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। दूसरी ओर, इसी तकनीक का उपयोग अत्यंत कम समय में नकली पाठ, नकली चित्र, कृत्रिम आवाज और गहरे नकली वीडियो बनाने में भी किया जा सकता है।

इस शोध-पत्र में हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का अध्ययन करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, भ्रामक सूचना, दुष्प्रचार, गहरे नकली वीडियो, तथ्य-जाँच तथा पत्रकारिता की विश्वसनीयता के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों, उपलब्ध शोध साहित्य, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, पत्रकारिता संबंधी मानकों और डिजिटल मीडिया से संबंधित दस्तावेजों पर आधारित है। अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पत्रकार का विकल्प बनाने के बजाय पत्रकार की सहायता करने वाली तकनीक के रूप में अपनाना अधिक उपयुक्त होगा।

KEYWORDS: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल पत्रकारिता, भ्रामक सूचना, दुष्प्रचार, तथ्य-जाँच, सामाजिक माध्यम, पत्रकारिता की विश्वसनीयता

भूमिका

पत्रकारिता लोकतांत्रिक समाज की सूचना-व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। इसका मूल उद्देश्य जनता को सार्वजनिक महत्व की घटनाओं, नीतियों, विचारों, समस्याओं और गतिविधियों के बारे में तथ्यात्मक, संतुलित और विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराना है। पत्रकारिता नागरिकों को अपने आसपास की दुनिया को समझने में सहायता करती है तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता और संस्थाओं की जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लंबे समय तक समाचार-पत्र, रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता के प्रमुख माध्यम रहे। समाचार-पत्र ने विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई, रेडियो ने त्वरित श्रव्य सूचना पहुँचाई और दूरदर्शन ने दृश्य-श्रव्य पत्रकारिता को व्यापक बनाया। इंटरनेट के आगमन

के बाद पत्रकारिता के स्वरूप में एक नया परिवर्तन आया। समाचार अब केवल अगले दिन समाचार-पत्र में प्रकाशित होने या निर्धारित समय पर समाचार बुलेटिन में प्रसारित होने तक सीमित नहीं रहा। अब कोई भी घटना कुछ ही क्षणों में वेबसाइट, मोबाइल अनुप्रयोग, सामाजिक माध्यम, वीडियो मंच और संदेश मंचों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुँच सकती है।

भारत में डिजिटल पत्रकारिता का विस्तार विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच ने हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री के उपभोग को बढ़ावा दिया है। हिंदी समाचार-पत्रों, समाचार-पोर्टलों, समाचार अनुप्रयोगों, वीडियो चैनलों तथा सामाजिक माध्यमों पर सक्रिय समाचार मंचों ने हिंदी पत्रकारिता की पहुँच को व्यापक बनाया है।

लेकिन डिजिटल विस्तार के साथ पत्रकारिता के सामने नई चुनौतियाँ भी आई हैं। इनमें फर्जी समाचार, भ्रामक सूचना, दुष्प्रचार, अफवाह, गलत संदर्भ में प्रस्तुत सामग्री, सनसनीखेज शीर्षक, सामाजिक माध्यमों की पक्षपाती सामग्री तथा कृत्रिम रूप से निर्मित चित्र, आवाज और वीडियो प्रमुख हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने इन चुनौतियों को और जटिल बना दिया है। अब ऐसी सामग्री तैयार करना संभव है जो पहली दृष्टि में पूरी तरह वास्तविक दिखाई देती है, जबकि उसका निर्माण किसी वास्तविक घटना के आधार पर नहीं हुआ होता। यही कारण है कि वर्तमान समय में पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती केवल सूचना की गति नहीं बल्कि सूचना की विश्वसनीयता है।

साहित्य समीक्षा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल पत्रकारिता, फेक न्यूज, डीपफेक, तथ्य-जाँच तथा सोशल मीडिया एल्गोरिद्म से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तकनीकी विकास ने पत्रकारिता के स्वरूप, कार्यप्रणाली, समाचार-निर्माण, वितरण और उपभोग की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन किया है। प्रारंभिक अध्ययनों में स्वचालित पत्रकारिता तथा एल्गोरिद्म आधारित समाचार-निर्माण को मुख्यतः तकनीकी दक्षता और पत्रकारिता श्रम में परिवर्तन के संदर्भ में देखा गया, जबकि नवीन अध्ययनों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की विश्वसनीयता, पारदर्शिता, दुष्प्रचार, डीपफेक और लोकतांत्रिक संचार पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रमुखता दी गई है।

कार्लसन (2015) ने स्वचालित पत्रकारिता के विकास का अध्ययन करते हुए बताया कि समाचार निर्माण में एल्गोरिद्म और स्वचालन की बढ़ती भूमिका पत्रकार के पारंपरिक कार्य और पत्रकारिता के प्राधिकार की अवधारणा को प्रभावित कर रही है। स्वचालित प्रणालियाँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध आँकड़ों को कम समय में संसाधित करके समाचार तैयार करने में सक्षम हैं। इससे पत्रकारिता की गति और उत्पादकता बढ़ती है, लेकिन साथ ही यह प्रश्न भी सामने आता है कि समाचार निर्माण में मानवीय निर्णय, संपादकीय विवेक और उत्तरदायित्व की भूमिका किस प्रकार निर्धारित की जाए।

डायकोपोलोस (2019) ने पत्रकारिता में एल्गोरिद्म की भूमिका को व्यापक रूप से रेखांकित किया है। उनके अध्ययन के अनुसार समाचार उत्पादन, चयन, प्राथमिकता निर्धारण और वितरण में एल्गोरिद्म की भूमिका बढ़ने के साथ पत्रकारिता में पारदर्शिता और जवाबदेही का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि समाचार सामग्री का चयन केवल उपयोगकर्ता की रुचि, क्लिक, लोकप्रियता अथवा सहभागिता के आधार पर किया जाता है, तो इससे सूचना के विविधतापूर्ण स्वरूप पर प्रभाव पड़ सकता है। हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के संदर्भ में यह समस्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि सोशल मीडिया मंचों पर समाचारों का प्रसार तेजी से होता है और पाठक कई बार समाचार की विश्वसनीयता की जाँच किए बिना उसे आगे साझा कर देते हैं।

वोसोगी, रॉय और अराल (2018) ने ऑनलाइन सच्ची और झूठी खबरों के प्रसार का अध्ययन करते हुए पाया कि झूठी खबरें सामाजिक

माध्यमों पर तेजी से और व्यापक स्तर पर फैल सकती हैं। इस अध्ययन ने डिजिटल संचार के उस पक्ष को सामने रखा जिसमें सूचना की सत्यता की अपेक्षा उसकी नवीनता, रोचकता और भावनात्मक प्रभाव अधिक प्रभावशाली हो सकता है। वर्तमान हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में यह निष्कर्ष फेक न्यूज और वायरल सामग्री को समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

वार्डल और डेरखाशन (2017) ने सूचना अव्यवस्था की अवधारणा को व्यवस्थित करते हुए गलत सूचना, दुष्प्रचार और दुर्भावनापूर्ण सूचना के बीच अंतर स्पष्ट किया। उनके अनुसार डिजिटल वातावरण में समस्या केवल झूठी सूचना के निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके प्रसार, पुनरुत्पादन और संदर्भ से बाहर प्रस्तुत किए जाने से भी जुड़ी है। इस दृष्टिकोण से हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में फेक न्यूज का अध्ययन केवल "सच्ची या झूठी खबर" के प्रश्न तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह भी देखना आवश्यक है कि सूचना किसने बनाई, किस उद्देश्य से बनाई, किस माध्यम से प्रसारित हुई और उसके सामाजिक प्रभाव क्या रहे।

पलोरिडी और चिरियाटी (2020) ने जीपीटी-3 जैसी उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों की प्रकृति, क्षमताओं और सीमाओं पर चर्चा की। उनके अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि भाषा-आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जैसी भाषा उत्पन्न करने में सक्षम होने के बावजूद मानवीय समझ, संदर्भ-बोध और सत्य की स्वतंत्र पुष्टि का पूर्ण विकल्प नहीं है। पत्रकारिता के संदर्भ में यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है, क्योंकि एआई द्वारा तैयार की गई भाषा स्वाभाविक और विश्वसनीय दिखाई दे सकती है, जबकि उसमें तथ्यात्मक त्रुटि या संदर्भगत समस्या की संभावना बनी रहती है।

रॉयटर्स इंस्टीट्यूट की डिजिटल न्यूज रिपोर्ट 2025 से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल और सोशल मीडिया आधारित समाचार उपभोग तेजी से महत्वपूर्ण हो रहा है। रिपोर्ट के अनुसार बड़ी संख्या में लोग ऑनलाइन उपलब्ध समाचारों की सत्यता को लेकर चिंतित हैं। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटबॉट्स के माध्यम से समाचार प्राप्त करने की प्रवृत्ति भी उभर रही है। इससे पत्रकारिता के सामने एक नई चुनौती पैदा होती है—कृत्रिम समाचार की विश्वसनीयता बनाए रखते हुए बदलती तकनीकी आदतों के अनुरूप स्वयं को विकसित करना।

विश्व आर्थिक मंच की ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट 2025 में गलत सूचना और दुष्प्रचार को निकट भविष्य के प्रमुख वैश्विक जोखिमों में शामिल किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से उत्पन्न यथार्थ-जैसी तस्वीरें, आवाजें और वीडियो इस समस्या को और जटिल बना सकते हैं। विशेष रूप से डीपफेक तकनीक ने दृश्य-श्रव्य सामग्री की विश्वसनीयता को चुनौती दी है। इससे पत्रकारों के लिए केवल पारंपरिक स्रोत-सत्यापन पर्याप्त नहीं रह जाताय उन्हें डिजिटल सामग्री की तकनीकी जाँच के नए तरीकों से भी परिचित होना आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा से उभरती शोध-रिक्तता

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता

और पत्रकारिता के संबंध पर पर्याप्त अंतरराष्ट्रीय अध्ययन उपलब्ध हैं। इसी प्रकार फेक न्यूज, दुष्प्रचार, स्वचालित पत्रकारिता, एल्गोरिद्म और डीपफेक पर भी व्यापक विमर्श विकसित हुआ है। किंतु हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के विशिष्ट संदर्भ में इन सभी घटकों-कृत्रिम बुद्धिमत्ता, फेक न्यूज, डीपफेक, तथ्य-जाँच, सोशल मीडिया एल्गोरिद्म और पत्रकारिता की विश्वसनीयताओं को एक समेकित अध्ययन के रूप में देखने वाले शोध अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देते हैं।

विशेष रूप से हिंदी भाषी पाठकों की सूचना-प्राप्ति की आदतों, सोशल मीडिया आधारित समाचार उपभोग, एआई-निर्मित हिंदी सामग्री, डीपफेक की पहचान, तथ्य-जाँच की चुनौतियों तथा पत्रकारिता संस्थानों की संपादकीय जिम्मेदारी के संदर्भ में और अधिक व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता है। यही शोध-रिक्तता वर्तमान अध्ययन के औचित्य को स्थापित करती है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

डिजिटल पत्रकारिता के विकास को व्यापक रूप से तीन चरणों में समझा जा सकता है। पहले चरण में पारंपरिक मीडिया संस्थानों ने अपनी सामग्री को इंटरनेट पर उपलब्ध कराना शुरू किया। समाचार-पत्रों और दूरदर्शन चैनलों की वेबसाइटें इस दौर की प्रमुख विशेषता थीं।

दूसरे चरण में सामाजिक माध्यमों और स्मार्टफोन पत्रकारिता का विस्तार हुआ। समाचारों के वितरण में सामाजिक माध्यमों की भूमिका बढ़ी। पाठक सीधे समाचार-पोर्टल पर जाने के बजाय सामाजिक माध्यमों पर दिखाई देने वाली सामग्री के माध्यम से समाचारों तक पहुँचने लगा।

तीसरे चरण में एल्गोरिद्म आधारित समाचार वितरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव बढ़ा। अब समाचारों की दृश्यता केवल संपादक के निर्णय से निर्धारित नहीं होती। सामाजिक माध्यमों और डिजिटल मंचों के एल्गोरिद्म भी यह प्रभावित करते हैं कि किसी उपयोगकर्ता को कौन-सी सामग्री दिखाई जाएगी।

इस प्रकार हिंदी डिजिटल पत्रकारिता अब केवल हिंदी भाषा में समाचार उपलब्ध कराने की प्रक्रिया नहीं है। यह पत्रकारों, संपादकों, पाठकों, सामाजिक माध्यमों, तकनीकी कंपनियों, एल्गोरिद्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तथ्य-जाँच संस्थाओं से मिलकर बने एक व्यापक सूचना-तंत्र का हिस्सा बन चुकी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पत्रकारिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसी तकनीकी प्रणालियों को कहा जाता है जो सामान्यतः मानव बुद्धि से जुड़े कार्यों को करने या उनमें सहायता करने में सक्षम होती हैं। इनमें भाषा को समझना, आँकड़ों का विश्लेषण करना, पैटर्न पहचानना, सामग्री तैयार करना, सामग्री का वर्गीकरण करना और भविष्यवाणी करना आदि शामिल हैं। पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कई स्तरों पर किया जा सकता है।

1. समाचार संकलन में उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण करके महत्वपूर्ण घटनाओं, रुझानों और समाचार योग्य तथ्यों की पहचान करने में सहायता कर सकती है। चुनाव परिणाम, मौसम संबंधी आँकड़े, खेल परिणाम, वित्तीय सूचनाएँ और सरकारी आँकड़े इसके उदाहरण हैं।

2. समाचार लेखन

संरचित आँकड़ों के आधार पर छोटे समाचार तैयार करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोगी हो सकती है। इससे पत्रकारों को नियमित और दोहराव वाले कार्यों से कुछ राहत मिल सकती है।

3. संपादन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तनी सुधार, व्याकरण, अनुवाद, ध्वनि से पाठ निर्माण तथा समाचार के संक्षिप्तीकरण में सहायता कर सकती है।

4. समाचार वितरण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोगकर्ता की रुचियों और व्यवहार का विश्लेषण करके उसे उसके अनुरूप समाचार दिखाने में सहायता कर सकती है। हालाँकि, यही प्रक्रिया एक नई समस्या भी पैदा करती है। यदि किसी उपयोगकर्ता को केवल उसकी रुचि के अनुरूप सामग्री दिखाई जाती है तो वह अन्य विचारों और दृष्टिकोणों से दूर हो सकता है।

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

हिंदी पत्रकारिता ने मुद्रित पत्रकारिता से डिजिटल पत्रकारिता और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पत्रकारिता तक लंबी यात्रा की है। हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित उपयोग निम्नलिखित हैं:

1. हिंदी ध्वनि को पाठ में बदलना।
2. समाचारों का स्वचालित प्रतिलेखन।
3. हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच अनुवाद।
4. लंबे समाचारों का संक्षिप्तीकरण।
5. समाचार शीर्षक के सुझाव।
6. आँकड़ों का विश्लेषण।
7. पुराने समाचारों और अभिलेखों की खोज।
8. वीडियो में उपशीर्षक तैयार करना।
9. सामग्री का वर्गीकरण।
10. पाठकों की रुचि के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराना।

लेकिन हिंदी भाषा की अपनी विशेषताएँ हैं। हिंदी में अनेक बोलियाँ, स्थानीय शब्द, मुहावरे, मिश्रित भाषा, क्षेत्रीय अभिव्यक्तियाँ और सांस्कृतिक संदर्भ पाए जाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणाली किसी वाक्य को व्याकरण की दृष्टि से सही बना सकती है, लेकिन उसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को गलत समझ सकती है। इसलिए हिंदी पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के साथ अनुभवी पत्रकार और संपादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में फर्जी समाचार की चुनौती

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में फर्जी समाचार की चुनौती अनेक क्षेत्रों में

दिखाई देती है। राजनीतिक घटनाएँ, चुनाव, अपराध, धर्म, सामाजिक विवाद, सरकारी योजनाएँ, राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे विषय विशेष रूप से संवेदनशील हैं। फर्जी समाचार के सामान्य रूप हैं:

- पुरानी तस्वीर को नई घटना बताना
- वास्तविक समाचार को गलत संदर्भ में प्रस्तुत करना
- किसी व्यक्ति के नाम से नकली बयान प्रसारित करना
- संपादित वीडियो
- नकली समाचार-पोर्टल
- नकली सामाजिक माध्यम खाता
- सनसनीखेज शीर्षक
- कृत्रिम रूप से तैयार चित्र
- कृत्रिम आवाज
- गहरे नकली वीडियो।

फर्जी समाचार का प्रभाव केवल गलत जानकारी तक सीमित नहीं रहता। यह समाज में अविश्वास, तनाव, ध्रुवीकरण और संस्थाओं के प्रति संदेह पैदा कर सकता है।

गहरे नकली वीडियो की चुनौती

गहरे नकली वीडियो ऐसी कृत्रिम सामग्री है जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से किसी व्यक्ति के चेहरे, आवाज या व्यवहार को बदलकर एक नकली दृश्य तैयार किया जाता है। इसके प्रमुख रूप हैं:

1. चेहरे में परिवर्तन
2. आवाज की नकल
3. नकली वीडियो
4. कृत्रिम साक्षात्कार
5. कृत्रिम भाषण
6. किसी व्यक्ति के नाम से नकली बयान।

पत्रकारिता के लिए यह गंभीर चुनौती है क्योंकि पहले वीडियो को सामान्यतः दृश्य प्रमाण माना जाता था। अब किसी वीडियो का उपलब्ध होना अपने आप में उसके वास्तविक होने की गारंटी नहीं देता। पत्रकार को यह जाँचना पड़ सकता है कि:

- वीडियो का मूल स्रोत क्या है?
- यह पहली बार कहाँ प्रकाशित हुआ?
- घटना की तारीख क्या है?
- क्या पूरा वीडियो उपलब्ध है?
- क्या आवाज और होंठों की गति में अंतर है?
- क्या अन्य विश्वसनीय स्रोत घटना की पुष्टि करते हैं?
- संबंधित व्यक्ति या संस्था ने प्रतिक्रिया दी है?
- क्या वीडियो को कृत्रिम रूप से बदला गया है?

हिंदी पत्रकारिता में विश्वसनीयता का संकट

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता की विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं:

- बिना पर्याप्त सत्यापन के समाचार प्रकाशित करना
- क्लिक आकर्षित करने वाले शीर्षक
- सनसनीखेज समाचार

- राजनीतिक पक्षधरता
- सामाजिक माध्यमों के अपुष्ट स्रोतों पर निर्भरता
- पुरानी तस्वीरों का गलत प्रयोग
- गलत वीडियो
- कृत्रिम सामग्री को वास्तविक बताना
- विज्ञापन और समाचार के बीच अस्पष्ट अंतर
- गलत समाचार के सुधार की अपर्याप्त व्यवस्था।

पत्रकारिता में मानवीय त्रुटि संभव है। लेकिन किसी त्रुटि के सामने आने के बाद उसे स्पष्ट रूप से स्वीकार करना और सुधार प्रकाशित करना विश्वसनीयता बढ़ा सकता है। भारतीय प्रेस परिषद के पत्रकारिता संबंधी मानदंडों में तथ्यात्मकता और निष्पक्षता को विशेष महत्व दिया गया है। पत्रकारों से अपेक्षा की जाती है कि वे अफवाहों और अपुष्ट सूचनाओं को तथ्य के रूप में प्रस्तुत न करें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित सामग्री और पारदर्शिता

यदि किसी समाचार की तैयारी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है तो पारदर्शिता आवश्यक हो जाती है। पाठक को यह जानने का अधिकार होना चाहिए कि:

- सामग्री किस प्रकार तैयार हुई
- क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग हुआ
- क्या चित्र कृत्रिम रूप से बनाया गया है
- क्या आवाज कृत्रिम है
- क्या पत्रकार ने सामग्री की स्वतंत्र पुष्टि की है।

समाचार संस्थानों को अपनी स्पष्ट कृत्रिम बुद्धिमत्ता नीति बनानी चाहिए।

ऐसी नीति में निम्न प्रावधान हो सकते हैं:

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की जानकारी
2. मानवीय संपादकीय समीक्षा
3. तथ्यों की स्वतंत्र पुष्टि
4. कृत्रिम चित्रों की पहचान
5. कृत्रिम आवाज की स्पष्ट सूचना
6. गलत सामग्री के सुधार की व्यवस्था
7. गोपनीय सूचनाओं की सुरक्षा।

पत्रकारों के लिए नई दक्षताएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में पत्रकारों को पारंपरिक पत्रकारिता कौशल के साथ नई तकनीकी दक्षताएँ भी प्राप्त करनी होंगी। इनमें प्रमुख हैं:

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता साक्षरता
2. डिजिटल सत्यापन
3. तथ्य-जाँच
4. आँकड़ा पत्रकारिता
5. मुक्त स्रोत सूचना संकलन
6. चित्र सत्यापन
7. वीडियो सत्यापन
8. गहरे नकली वीडियो की पहचान
9. अल्गोरिद्म की समझ

10. डिजिटल नैतिकताय
11. साइबर सुरक्षाय
12. आँकड़ा गोपनीयताय
13. कृत्रिम सामग्री की पहचान।

मीडिया साक्षरता की भूमिका

फर्जी समाचार से मुकाबला केवल पत्रकारों और समाचार संस्थानों की जिम्मेदारी नहीं है। पाठकों और दर्शकों में मीडिया साक्षरता विकसित करना भी आवश्यक है। एक जागरूक नागरिक को किसी भी वायरल समाचार को तुरंत साझा करने से पहले कुछ प्रश्न पूछने चाहिए।

- यह समाचार किसने प्रकाशित किया?
- स्रोत कितना विश्वसनीय है?
- क्या अन्य विश्वसनीय माध्यमों ने भी इसे प्रकाशित किया है?
- क्या तस्वीर पुरानी हो सकती है?
- क्या वीडियो का संदर्भ सही है?
- क्या शीर्षक और समाचार में समानता है?
- क्या यह सामग्री कृत्रिम रूप से निर्मित हो सकती है?
- क्या मूल स्रोत उपलब्ध है?

मीडिया साक्षरता नागरिकों को केवल समाचार उपभोक्ता नहीं बल्कि जिम्मेदार सूचना उपयोगकर्ता बनाने में सहायता करती है।

डिजिटल मंचों की जिम्मेदारी

सामाजिक माध्यम और डिजिटल मंच आज सूचना के वितरण की महत्वपूर्ण व्यवस्था बन चुके हैं। इसलिए उनकी कुछ प्रमुख जिम्मेदारियाँ होनी चाहिए:

- सामग्री के स्रोत और स्वरूप में पारदर्शिताय
- कृत्रिम सामग्री की पहचानय
- भ्रामक अभियानों पर कार्रवाईय
- उपयोगकर्ताओं के लिए शिकायत व्यवस्थाय
- सामग्री हटाने के निर्णयों में पारदर्शिताय
- शोधकर्ताओं को आवश्यक जानकारी उपलब्ध करानाय
- अल्गोरिदम संबंधी उत्तरदायित्वय
- चुनावी सूचना की विश्वसनीयता की रक्षा।

डिजिटल मंचों की भूमिका केवल तकनीकी सेवा प्रदाता की नहीं बल्कि सूचना व्यवस्था के महत्वपूर्ण भागीदार की हो गई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और लोकतंत्र

लोकतंत्र में पत्रकारिता का प्रमुख कार्य नागरिकों को विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराना है। यदि गलत जानकारी व्यापक स्तर पर फैलती है तो लोकतांत्रिक संवाद प्रभावित हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस समस्या को दो प्रकार से प्रभावित करती है।

सकारात्मक पक्ष:

बड़ी मात्रा में आँकड़ों का विश्लेषण, दस्तावेजों की खोज, तथ्य-जाँच और खोजी पत्रकारिता में सहायता।

नकारात्मक पक्ष:

नकली चित्र, आवाज, वीडियो और पाठ का तेज तथा बड़े पैमाने पर निर्माण।

इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लोकतांत्रिक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि समाज इसका उपयोग किस प्रकार करता है और इसके लिए किस प्रकार की नैतिक तथा नियामक व्यवस्था विकसित की जाती है।

अध्ययन की शोध-पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

1 अध्ययन की प्रकृति

शोध में द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है।

2 स्रोत

अध्ययन के लिए निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया है।

- शोध-पत्रय
- शोध ग्रंथय
- अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टय
- पत्रकारिता संबंधी रिपोर्टय
- सरकारी और संस्थागत दस्तावेजय
- पत्रकारिता संबंधी मानदंडय
- डिजिटल मीडिया संबंधी अध्ययनय
- तथ्य-जाँच संबंधी साहित्य।

3 विश्लेषण की इकाई

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता का व्यापक सूचना-तंत्र अध्ययन की प्रमुख इकाई है।

इसमें पत्रकार, संपादक, समाचार संगठन, पाठक, सामाजिक माध्यम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, तथ्य-जाँच व्यवस्था और डिजिटल मंच शामिल हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं।

1. हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना।
2. पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रयोग का विश्लेषण करना।
3. फर्जी समाचार की प्रकृति और प्रभाव का अध्ययन करना।
4. गहरे नकली वीडियो को पत्रकारिता की नई चुनौती के रूप में समझना।
5. तथ्य-जाँच की भूमिका का अध्ययन करना।
6. सामाजिक माध्यमों के अल्गोरिदम के प्रभाव का विश्लेषण करना।
7. पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव को समझना।
8. पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक प्रश्नों की पहचान करना।
9. हिंदी पत्रकारिता के लिए जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग का मॉडल प्रस्तुत करना।
10. भविष्य की हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के लिए सुझाव देना।

चर्चा

डिजिटल पत्रकारिता के विकास ने पत्रकारिता के पारंपरिक द्वारपाल की अवधारणा को बदल दिया है। पहले समाचार-पत्र का संपादक यह निर्धारित करता था कि कौन-सा समाचार प्रकाशित होगा और किस स्थान पर होगा। अब स्थिति अधिक जटिल है। समाचार की दृश्यता पर पत्रकार, संपादक, सामाजिक माध्यमों के अल्गोरिद्म, खोज व्यवस्था और पाठकों की प्रतिक्रिया सभी प्रभाव डाल सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इस व्यवस्था को और जटिल बनाया है। अब सामग्री का निर्माण भी मशीनों की सहायता से हो सकता है और उसका वितरण भी मशीन-आधारित प्रणालियों से प्रभावित हो सकता है। इसीलिए आधुनिक पत्रकारिता में तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक और संपादकीय दक्षता आवश्यक है।

अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं।

पहली, यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें किसी निश्चित क्षेत्र के पत्रकारों या पाठकों पर प्रत्यक्ष सर्वेक्षण शामिल नहीं किया गया है।

दूसरी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीक बहुत तेजी से बदल रही है। इसलिए भविष्य में इस अध्ययन के निष्कर्षों को नए तकनीकी विकास के अनुसार अद्यतन करने की आवश्यकता होगी।

तीसरी, उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय शोध का एक बड़ा भाग अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी मीडिया व्यवस्था पर आधारित है। हिंदी और भारतीय भाषाओं में अधिक प्राथमिक शोध की आवश्यकता है।

चौथी, गहरे नकली वीडियो की पहचान करने वाली तकनीक भी निरंतर विकसित हो रही है। इसलिए किसी एक तकनीकी समाधान को स्थायी समाधान नहीं माना जा सकता।

शोध के परिणाम का सारांश और अध्ययन का महत्व

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पत्रकारिता के सामने एक नए युग का द्वार खोल दिया है। यह तकनीक पत्रकारों के लिए अनेक अवसर लेकर आई है। समाचार संकलन, आँकड़ा विश्लेषण, प्रतिलेखन, अनुवाद, सामग्री का संक्षिप्तीकरण और तथ्य-जाँच जैसे कार्यों में इसका उपयोग पत्रकारिता को अधिक तेज और प्रभावी बना सकता है। लेकिन इसके साथ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नकली पाठ, चित्र, आवाज और वीडियो तैयार करना आसान बना दिया है। गहरे नकली वीडियो के कारण अब किसी दृश्य या आवाज को केवल इसलिए वास्तविक नहीं माना जा सकता कि वह देखने और सुनने में वास्तविक प्रतीत हो रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पत्रकार की सहायता कर सकती है, लेकिन पत्रकारिता का अंतिम निर्णय कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नहीं सौंपा जा सकता। पत्रकारिता की विश्वसनीयता का आधार केवल तकनीक नहीं बल्कि तथ्य, सत्यापन, पारदर्शिता, निष्पक्षता और मानवीय उत्तरदायित्व हैं। भविष्य की हिंदी पत्रकारिता का सबसे प्रभावी मॉडल वह होगा

जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीकी क्षमता और मानव पत्रकार की सामाजिक, नैतिक तथा संपादकीय समझ एक साथ काम करें।

अतः कहा जा सकता है कि “कृत्रिम बुद्धिमत्ता पत्रकारिता का विकल्प नहीं, बल्कि पत्रकारिता को अधिक सक्षम बनाने का साधन है। इसकी विश्वसनीयता का वास्तविक आधार मानवीय सत्यापन और संपादकीय उत्तरदायित्व है।”

यदि हिंदी डिजिटल पत्रकारिता इन चारों के बीच संतुलन स्थापित करने में सफल होती है तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता पत्रकारिता की विश्वसनीयता के लिए खतरा बनने के बजाय उसे अधिक प्रभावी, तेज, सटीक और लोकतांत्रिक बनाने का माध्यम बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. रॉयटर्स इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ जर्नलिज्म (2025), डिजिटल समाचार रिपोर्ट 2025, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय।
2. यूनेस्को(2023), डिजिटल मंचों के शासन के लिए दिशानिर्देशरू बहु-पक्षीय दृष्टिकोण के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना तक पहुँच की सुरक्षा, पेरिसरू यूनेस्को।
3. भारतीय प्रेस परिषद (2022), पत्रकारिता आचरण के मानदंड, नई दिल्ली: भारतीय प्रेस परिषद।
4. रॉयटर्स इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ जर्नलिज्म, डिजिटल समाचार और समाचार उपभोग संबंधी अध्ययन, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय।
5. विश्व आर्थिक मंच(2025), विभाजित होती दुनिया और बढ़ते वैश्विक जोखिम, जिनेवारा विश्व आर्थिक मंच
6. भारतीय प्रेस परिषद, पत्रकारिता आचरण संबंधी आधिकारिक मानदंड एवं दिशानिर्देश, नई दिल्ली।
7. कार्लसन, एम. (2015), रोबोटिक रिपोर्टर: स्वचालित पत्रकारिता तथा श्रम, रचनात्मक स्वरूप और पत्रकारिता प्राधिकार का पुनर्परिभाषण। डिजिटल जर्नलिज्म, 3(3), 416-431
8. डायकोपोलोस, एन. (2019), समाचारों का स्वचालन: एल्गोरिद्म किस प्रकार मीडिया को पुनर्लिख रहे हैं। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
9. फ्लोरिडी, एल., एवं चिरियाटी, एम. (2020), जीपीटी-3: इसकी प्रकृति, कार्यक्षेत्र, सीमाएँ और परिणाम। माइंड्स एंड मशीन्स, 30, 681-694
10. वार्डल, सी., एवं डेरखाशन, एच. (2017), सूचना अव्यवस्था: अनुसंधान और नीतिनिर्माण के लिए एक अंतर्विषयक रूपरेखा की ओर। यूरोप परिषद
11. वोसोगी, एस., रॉय, डी., एवं अराल, एस. (2018), ऑनलाइन सच्ची और झूठी खबरों का प्रसार। साइंस, 359(6380), 1146-1151